शशकर्णः काण्वः।अश्विनौ। अनुष्टुप्, १,४,६,१४-१५ बृहती, २,३,२०,२१ गायत्री, ५ ककुप्, १० त्रिष्टुप्, ११ विराट्, १२ जगती।

**आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे।प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिर्युयुतं या अरातयः॥ ८.००९.०१**

अश्विना- हे अश्विनौ प्राणेशानशक्तिभूतौ। युवम्- युवाम्। वत्सस्य- युवयोर्वत्सभूतस्य ऋषेः। अवसे- रक्षायै। नूनम्- निश्चयेन। आ गन्तम्- आगच्छतम्। अस्मै- एतस्मै। अवृकम्- अक्रूरम्। पृथु- महत्। च्छर्दिः- गृहम्। प्र- प्रकर्षेण। यच्छतम्- दत्तम्। याः- ये। अरातयः- लोभिनः स्वार्थैकपरास्तान्। युयुतम्- पृथक्कुरुतम्॥१॥

**यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु।नृम्णं तद्धत्तमश्विना॥ ८.००९.०२**

यत्। नृम्णम्- वीर्यम्। दिवि- नभसि। अन्तरिक्षे- द्यावापृथिव्योरन्तराळे देशे। पञ्च मानुषान् अनु- ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रनिषादान् अनुसृत्यास्ति। तत्। अश्विना- हे अश्विनौ। धत्तम्- यच्छतम्॥२॥

**ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः।एवेत्काण्वस्य बोधतम्॥ ८.००९.०३**

अश्विना- हे अश्विनौ। ये। विप्रासः- मेधाविनः। वाम्- युवयोः। दंसांसि- दर्शनानि कर्माणि वा। परिमामृशुः- अस्पृशन्। तान् यथा बोधतम्। एवेत्- तथैव। काण्वस्य- मन्त्रविदो ममापि। बोधतम्- बुद्ध्येथाम्॥३॥

**अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते।अयं सोमो मधुमान्वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः॥ ८.००९.०४**

वाजिनीवसू- सम्पद्युक्तौ। अश्विना- हे अश्विनौ। अयम्- इदम्। वाम्- युवयोः। घर्मः- घर्मोपलक्षितकठिनसाधनम्। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुत इति श्रुतिः। स्तोमेन- मन्त्रेण। परि षिच्यते- संस्क्रियते। येन। वृत्रम्- आवरणम्। चिकेतथः- नाशयितुं जानीथः। अयम्- सोयम्। मधुमान्- मधुरः। सोमः- रसः॥४॥

Dr. Rangani

**यदप्सु यद्वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम्। तेन मा विष्टमश्विना॥ ८.००९.०५**

पुरुदंससा- बहुकर्माणौ बहुदर्शनौ। अश्विना- हे अश्विनौ। यत्। अप्सु- उदकेषु। वनस्पतौ- वृक्षादिषु। ओषधीषु। युवाभ्यां भेषजं कृतम्। तेन। मा- माम्। अविष्टम्- रक्षतम्॥५॥

**यन्नासत्या भुरण्यथो यद्वा देव भिषज्यथः।**

**अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः॥ ८.००९.०६**

नासत्या- हे सत्यस्वरूपौ। यत्- यौ। भुरण्यथः- पोषयथः। यत्- यौ। देवा- देवौ। भिषज्यथः- भैषज्यं कुरुथः। वाम्- तयोर्युवयोः। वत्सः। अयम्। मतिभिः- मननैः। न विन्धते- युवां न लभते। हविष्मन्तम्- चरुपुरोडाशध्यानभावनादिहव्यवन्तम्। हि- खलु। गच्छथः॥६॥

**आ नूनमश्विनोर्ऋषिः स्तोमं चिकेत वामया। आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि॥ ८.००९.०७**

नूनम्- निश्चयेन। ऋषिः- सूक्ष्मदर्शी। अश्विनोः। वामया- कल्याण्या भावनया। स्तोमम्- मन्त्रम्। चिकेत- बुद्ध्यते। अथर्वणि- चित्तवृत्तिनिरोधक अग्नौ। थर्वतिश्चरतिकर्मा तत्प्रतिषेध इति यास्कः। मधुमत्तमम्- अतिशयेन मधुरम्। सोमम्- रसम्। घर्मं- घर्मोपलक्षितकठिनसाधनम्। आ सिञ्चत्- समर्पयेत्॥७॥

**आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना। आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत॥ ८.००९.०८**

अश्विना। रघुवर्तनिम्- लघुगमनम्। रथम्। आ तिष्ठाथः- अधितिष्ठथः। इमे- एते। मम- मे। स्तोमाः- मन्त्राः। नभो न- आकाशसमौ। वाम्- युवाम्। आ चुच्यवीरत- अभिगच्छन्ति॥८॥

**यदद्य वां नासत्योक्थैराचुच्युवीमहि। यद्वा वाणीभिरश्विनेवेत्काण्वस्य बोधतम्॥ ८.००९.०९**

अद्य- इदानीम्। नासत्या- सत्यस्वरूपौ। वाम्- युवाम्। उक्थैः- मन्त्रैः। आचुच्युवीमहि- आगमयेम। अश्विना। एवेत्- एवमेव। काण्वस्य- मन्त्रविदः। वाणीभिः- वाग्भिः। बोधतम्- बुद्ध्येथाम्॥९॥

Dr. Rangaji

**यद्वा॑ क॒क्षीवाँ॑ उ॒त यद्व्य॑श्व ऋषि॒र्यद्वा॑ दी॒र्घत॑मा जु॒हाव॑।**

**पृथी॒ यद्वा॑ वै॒न्यः साद॑नेष्वे॒वेदतो॑ अश्विना चेतयेथाम्॥ ८.००९.१०**

यत्। कक्षीवान्- मन्त्रवर्गसंपन्नो ध्यानभावनाश्रेणीसंपन्नो वा। उत- अपि च। यत्- यथा। व्यश्वः- विशेषाश्वो विशेषप्राणोपासकः। ऋषिः- सूक्ष्मदर्शी। यत्- यथा। दीर्घतमाः- दीर्घान्धकारपीडितः। तदन्धकारनाशाय। वाम्- युवाम्। जुहाव- आह्वयति स्म। यत्- यथा। पृथी- गुरुगुणयुक्तः। वैन्यः- कमनीयः। सदनेषु- देवयजनदेशेषु। जुहाव। एवेत्- तथैव। अतः- इदं मम स्तवम्। अश्विना। चेतयेथाम्- जानीतम्॥१०॥

**या॒तं छ॑र्दि॒ष्पा उ॒त नः॑ पर॒स्पा भू॒तं ज॑ग॒त्पा उ॒त न॑स्तनू॒पा।**

**व॒र्तिस्तो॒काय॒ तन॑याय यातम्॥ ८.००९.११**

यातम्- आगच्छतम्। छर्दिष्पा- गृहपती। उत- अपि च। नः- अस्माकम्। परस्पा- अतिशयेन पालकौ। भूतम्- भवतम्। जगत्पा- जगत्पालकौ। उत- अपि च। नः- अस्माकम्। तनूपा- देहपालकौ। तोकाय तनयाय- धर्मसन्ततये। वर्तिः- गृहम्। यातम्- आगच्छतम्॥११॥

**यदिन्द्रे॑ण स॒रथं॑ या॒थो अ॑श्विना॒ यद्वा॑ वा॒युना॒ भव॑थः॒ समो॑कसा।**

**यदा॑दि॒त्येभि॑र्ऋ॒भुभिः॑ स॒जोष॑सा॒ यद्वा॒ विष्णो॑र्वि॒क्रम॑णेषु॒ तिष्ठ॑थः॥ ८.००९.१२**

अश्विना- प्राणेशनशक्तिभूतौ। इन्द्रेण- ईशनाधिदैवतेन। सरथम्- समाने रथे। याथः- आगच्छथः। वायुना- प्राणाधिदैवतेन। समोकसा- समानसदनौ। भवथः- स्थः। आदित्येभिः- अखण्डप्रकृतिजैः। ऋभुभिः- उरुभासमानैश्चित्किरणैः। सजोषसा- समानहृदयौ स्थः। विष्णोः- सर्वव्यापिनः। विक्रमणेषु- व्याप्तिषु। तिष्ठथः॥१२॥

**यद॒द्याश्विना॑व॒हं हु॒वेय॒ वाज॑सातये। यत्पृ॒त्सु तु॒र्वणे॒ सह॒स्तच्छ्रेष्ठ॑म॒श्विनो॒रव॑ः॥ ८.००९.१३**

अश्विनौ। अहम्। वाजसातये- अन्नलब्धये। हुवेय- आह्वयेय। पृत्सु- युद्धेषु। तुर्वणे- आवरणबाधने। यत्- या। सहः- शक्तिः। तत्- सा। श्रेष्ठम्- उत्तमा। अश्विनोः। अवः- रक्षामयी॥१३॥

Dr. Rangani

**आ नूनं यातमश्विनेमा हव्यानि वां हिता।**

**इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदौ विमे कण्वेषु वामथः॥ ८.००९.१४**

नूनम्- अवश्यम्। अश्विना। आ यातम्- आगच्छतम्। इमा- एतानि। हव्यानि- चरुपुरोडाशध्यानभावनादिहव्यानि। वाम्- युवयोरर्थे। हिता- स्थापितानि। इमे- एते। सोमासः- रसाः। तुर्वशे- त्वरमाणे। यदौ- याज्ञिके। यजते इति यदुरिति शब्दकल्पद्रुमे। नियते वा। यम उपरमे। अधि। भवन्ति। अथ। इमे- एते रसाः। कण्वेषु- मन्त्रवित्सु। वाम्- युवयोरर्थे कृताः॥१४॥

**यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम्।**

**तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम्॥ ८.००९.१५**

नासत्या- हे सत्यस्वरूपौ। यत्। छर्दिः- शरणम्। भेषजम्। पराके- दूरे। अर्वाके- समीपे। अस्ति। तेन। नूनम्- अवश्यम्। प्रचेतसा- प्रकर्षचेतनौ। विमदाय- विशेषतृप्तिमते। वत्साय- त्वद्वत्सभूताय। अभयम्। यच्छतम्- दत्तम्॥१५॥

**अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः। व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः॥ ८.००९.१६**

अश्विनोः। देव्या। वाचा। साकम्- सार्धम्। अहम्। प्र- प्रकर्षेण। अभुत्सि- प्रबुद्धोस्मि। देवि- द्योतनशीले। मर्त्येभ्यः- मनुष्याणाम्। मतिम्- बुद्धिम्। रातिम्- दानम्। वि आवः- प्रकाशय॥१६॥

**प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि। प्र यज्ञहोतरानुषक्प्र मदाय श्रवो बृहत्॥ ८.००९.१७**

उषः- प्रभाति ज्ञानोदयदेवते। अश्विना- प्राणेशनशक्तिभूतौ। देवि। सूनृते- प्रियहितमयि। महि- महति। प्र बोधय। यज्ञहोतः- यज्ञेषु देवाह्वातः। आनुषक्- सन्ततं यथा भवति तथा। मदाय- तृप्तये। बृहत्- महत्। श्रवः- अतीन्द्रियश्रवणम्। तदुपलक्षितदिव्यानुभूतिम्। प्र- प्रकर्षेण धारय॥१७॥

**यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे। आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम्॥ ८.००९.१८**

Dr. Rangani

उषः- अरुणोदयदेवते। ज्ञानोदयदेवते। भानुना- स्वप्रकाशेन। यत्- यदा। यासि- सरसि। तदा। सूर्येण- सवित्रा। आत्मसूर्येण। सम्- सम्यक्। रोचसे- प्रकाशसे। अयम्- एषः। अश्विनोः- प्राणेशनशक्तिभूतयोः। रथः- सद्रंहणप्रतीकरथः। नृपाय्यम्- वीरैः पालनीयम्। वर्तिः- गृहम्। आ याति- आगच्छति ॥१८॥

**यदापीतासो अंशवो गावो न दुह्र ऊधभिः। यद्वा वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना॥ ८.००९.१९**

आपीतासः- अनुभूताः। अंशवः- रसाः। गावः- धेनवः। ऊधभिः- ऊधोभिः। न- इव। दुह्रे- दुहते। अश्विना। देवयन्तः- देवकामा उपासकाः। प्र- प्रकर्षेण। वाणीरनूषत- अस्तुवन् ॥१९॥

**प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे। प्र दक्षाय प्रचेतसा॥ ८.००९.२०**

द्युम्नाय- दीप्तये। शवसे- बलाय। नृषाह्याय- सहसे। शर्मणे- मङ्गळाय। दक्षाय- सामर्थ्याय। प्रचेतसा- प्रकर्षचेतनावश्विनौ। प्र- प्रकर्षेण। स्थः ॥२०॥

**यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः। यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या॥ ८.००९.२१**

नूनम्- अवश्यम्। अश्विना। धीभिः। पितुः- पालकस्य। योना- सदने। निषीदथः- उपविशथः। सुम्नेभिः- सुखभावनैः। उक्थ्या- स्तुतौ। आगच्छतम् ॥२१॥

Dr. Rangaji